Semester-1 MJC 2025-2029-

(Development of Emotions)

शिशु जन्म लेता है तब उसे न तो कोई ज्ञान होता है और न ही कोई निश्चित संवेगात्मक अनुभव वाटसन (1924) ने नवजात शिशु के सामने आग, साँप इत्यादि उपस्थित किए तथा उन्हें कुछ ऊँचाई से नीचे गिराया, सभी घटनाओं के प्रति शिशुओं ने जो प्रतिक्रियाएँ व्यक्त की, उनके आधार पर यह कहा जा सकता है। नवजात शिशुओं में भय, प्रेम और क्रोध के मूलभूत संवेग पाए जाते हैं। अध्ययनों और प्रयोगों से वाटसन के इस निष्कर्ष की पुष्टि नहीं होती है। इसी प्रकार शर्मन (Sherman) ने भी कई उद्दीपनों के जरिए नवजात शिशुओं की उत्तेजना को पाया तथा उनके लक्षण लिखे, पश्चात उनके कुछ मनोविज्ञानिकों ने सभी जैसे ब्रिजेज (Bridges) और दूसरे मनोवैज्ञानिकों के इस निष्कर्ष को अधिक सही कह सकते हैं कि जन्मजात शिशु को सिर्फ उत्तेजना (excitement) का अनुभव होता है और जब वह धीरे धीरे बड़ा होने लगता है तब उसमें विविध संवेग भी विकसित होने लगता है। ब्रिजेज ने दो वर्ष की आयु तक के काफी से शिशुओं का प्रेक्षण करके यह निष्कर्ष निकाला किस प्रकार बच्चों में दो वर्ष की आयु तक धीरे-धीरे विभिन्न संवेगों का विकास हो जाता है। नवजात शिशु को किसी संवेग का नहीं, अपितु सिर्फ सामान्य उत्तेजना का अनुभव होता है। जब शिशु तीन महीने का होता है तब उत्तेजना के अलावा उसे किसी प्रकार के कष्ट तथा सुख का अनुभव होने लगता है। सामान्य भाषा में जिसे बेचैनी (Distress) तथा प्रसन्नता (Delight) कहा जाता है। जब शिशु 6 महीने का होता है तो उसमें बेचैनी, क्रोध,

Expt. No.

विरूपता (Disgust) तथा स्नेह (Affection) का प्रदर्शन भी करने लगता है। एक से डेढ़ वर्ष की आयु के मध्य ईर्ष्या (Jealousy) का अनुभव करने लगता है। साथ ही, वे छोटे बच्चों तथा बड़ों के प्रति भिन्न प्रकार से स्नेह का प्रदर्शन करने लगते हैं। डेढ़ से दो वर्ष की आयु के भीतर बच्चों में हर्ष (Joy) विकसित हो जाता है। इस प्रकार, दो वर्ष की आयु होने तक बच्चों में मूलभूत संवेग विकसित हो जाते हैं। इसका अभिप्राय यह नहीं है कि दो वर्ष की आयु के पश्चात कोई संवेग विकसित नहीं होते हैं। इसके कई संवेग बाद की आयु में विकसित होते हैं। यह भी सम्भव है कि दो वर्ष तक की आयु में भी कुछ बच्चों में संवेगों का विकास ठीक इसी रूप में न हो, कुछ मनोवैज्ञानिक संवेगों के इन कतिपय नामों को स्वीकृत नहीं कर सकते हैं। आप उपर्युक्त वर्णन इतना ही स्पष्ट करता है कि नवजात शिशु उत्तेजना का अनुभव करता है तथा जैसे-जैसे आयु बढ़ती है, उसमें विभिन्न संवेगों का विकास होता है। संवेगों के विकास में दो प्रक्रियाएँ मुख्य भूमिका अदा करती हैं परिपक्वता तथा सीखना (Learning) परिपक्वता ऐसी प्रक्रिया है जन्मजात तथा जैविक होती है। यह जीव विज्ञान का है जो कि शरीर की परिपक्वता प्राप्त तक स्वतः स्वाभाविक रूप से चलती रहती है। सबसे अधिक सीखना एवं उपार्जित प्रक्रिया है जिसमें मनुष्य अभ्यास या परिश्रम के माध- व्यवहार या कौशल को अपनाता है तथा उसमें दक्षता प्राप्त करता है।

Teacher's Signature